SWETA DUBEY
ASST.PROFESSOR,
GSCW B.Ed., PEDAGOGY OF SCHOOL SUBJECT ECONOMICS,SEM-2, PAPER-VII A UNIT-I
TOPIC- DIFFERENCE BETWEEN AIMS & OBJECTIVE

Scanned with CamScanner

भूमिका

विद्यालय पाठ्यक्रम में कोई भी विषय स्वयं में साध्य के रूप में स्थान प्राप्त नहीं करता। इसको कुछ महत्त्वपूर्ण लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तावित किया जाता है। हमें यह निर्धारित करना पड़ता है कि बच्चे इससे क्या सीख सकते हैं ? क्या कर सकते हैं तथा इसके ज्ञान से क्या बन सकते हैं ? वे ऐसा क्यों करना चाहते हैं ? अतः किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिये लक्ष्य एवं उद्देश्य का ज्ञान होना आवश्यक है। अतः शिक्षण-कार्य लक्ष्य के अभाव में सुचारु रूप से संचालित नहीं किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में **बी. डी. भाटिया** का कथन है–**"लक्ष्यों के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है जो अपनी मंजिल को नहीं जानता है और बालक उस पतवारहीन नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी भी तट पर जा सकेगी।"**[1]

स्वतः ही प्रश्न उठता है कि अर्थशास्त्र शिक्षण के लक्ष्य क्या हैं ? परन्तु इनको जानने से यह जानना अनिवार्य हो जाता है कि इन लक्ष्यों के निर्धारण का आधार क्या है ?

Scanned with CamScanner

माँगों, आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुकूल हों। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर विभिन्न देशों के विभिन्न विचारकों ने विभिन्न कालों में शिक्षा के विभिन्न लक्ष्यों का निर्माण किया। परन्तु आधुनिक शिक्षा में बालक को अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया जाने लगा। इस कारण शैक्षिक लक्ष्यों के निर्माण में उनकी आवश्यकताओं, रुचियों, क्षमताओं आदि का भी ध्यान रखा जाने लगा है। समाज यह निर्धारित करता है कि 'क्या प्राप्त किया जाना चाहिए ?' शिक्षक यह निर्धारित करता है कि 'क्या प्राप्त किया जा सकता है ?' इनसे निकला हुआ परिणाम ही शैक्षिक लक्ष्य होता है। अतः शिक्षा के लक्ष्यों के निर्धारक—नागरिक, शिक्षक, छात्र तथा जीवन- दर्शन हैं। यद्यपि शैक्षिक लक्ष्यों के निर्धारण में समाज, व्यवस्थापिका, समाचार-पत्र, राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री आदि भी भाग लेते हैं, परन्तु ये केवल दिशा का निर्धारण करते हैं।

Scanned with CamScanner

लक्ष्यों के निर्धारक
(DETERMINANTS OF THE AIMS)

'शिक्षा' समाज की आधारशिला है। समाज में जिस प्रकार की शिक्षा होगी उसी प्रकार के समाज का निर्माण होगा। अतः इस बात का सदैव प्रयास किया गया है कि शिक्षा के लक्ष्य समाज की

---

1. "Without the knowledge of aims the educator is like a sailor who does not know his goal or his destination and the child is like a rudderless vessel which will be drifted along somewhere ashore."
—**B. D. Bhatia**

Scanned with CamScanner

लक्ष्य, मूल्य तथा उद्देश्य में भेद
(DIFFERENCE AMONG AIMS, VALUES AND OBJECTIVES)

लक्ष्य व्यापक है जिसे प्राप्त करने में अधिक समय लगता है। लक्ष्य आदर्श पर आधारित है जिसे प्राप्त करने में विद्यालय की समस्त पाठ्यक्रमीय एवं पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ सहायक होती हैं। **कार्टर वी. गुड** ने लिखा है–**"लक्ष्य पूर्व निर्धारित साध्य होता है जो किसी कार्य या क्रिया का मार्गदर्शन करता है।"**[1] लक्ष्य में दूरदर्शिता होती है। साथ ही इसमें आदर्शवादिता होती है। इसकी प्राप्ति में कठिनाइयाँ भी आती हैं परन्तु अनुपयोगी (Useless) नहीं होते हैं। **वेस्ले** के अनुसार, **"तारागण उपयोगी हैं, यद्यपि नाविक (Mariner) उन तक कभी नहीं पहुँचता है।"** अतः लक्ष्य सदैव प्राप्त नहीं हो पाते हैं।

Scanned with CamScanner

मूल्य (Value) लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में प्राप्त उपयोगी अनुभव है। लक्ष्य हमारा एक होता है। परन्तु उसकी प्राप्ति में बहुत से अनुभव प्राप्त हो सकते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि हम सदैव अपने उद्देश्य को प्राप्त ही कर लें परन्तु हमें लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में बहुत से अनुभव प्राप्त हो सकते हैं। **प्रो. घाटे** (Ghate) ने लक्ष्य तथा मूल्य के अन्तर को एक सुन्दर उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया है–"कोलम्बस ने भारत पहुँचने के लिए एक नवीन मार्ग की खोज करना अपना लक्ष्य निर्धारित किया था। परन्तु कोलम्बस अपने निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति न कर सका और इस लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में उसने अमेरिका की खोज की।" अतः अमेरिका की खोज मूल्य की श्रेणी में आयेगी, न कि लक्ष्य के अन्तर्गत।

Scanned with CamScanner

उद्देश्य (Objective)–उद्देश्य के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कार्टर वी. गुड ने लिखा है–"उद्देश्य वह मापदण्ड या उद्देश्य है जिसको छात्र द्वारा विद्यालयी क्रिया को पूर्ण करके प्राप्त किया जाता है।"[2] कार्टर महोदय ने आगे लिखा है–"उद्देश्य छात्र के व्यवहार में वह इच्छित परिवर्तन है जो विद्यालय द्वारा पथ-प्रदर्शित अनुभव का परिणाम होता है।"[3] इस प्रकार उद्देश्य में लक्ष्य की अपेक्षा व्यावहारिकता अधिक होती है। इसको प्राप्त कराने का दायित्व शिक्षक के कन्धों पर होता है।

Scanned with CamScanner

लक्ष्य एवं उद्देश्य के अन्तर को निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है–

लक्ष्य	उद्देश्य
1 लक्ष्य शिक्षा को निर्धारित दिशाएँ प्रदान करते हैं। शिक्षा इनके अभाव में वांछित दिशा में प्रगति नहीं कर सकती है।	1. उद्देश्य वह बिन्दु है जो निर्धारित दिशा में सम्भव उपलब्धि को व्यक्त करता है।
2. लक्ष्य की प्राप्ति विद्यालय कार्यक्रम के क्षेत्र से बाहर है। दूसरे शब्दों में, लक्ष्यों को केवल विद्यालयी कार्यक्रमों से प्राप्त करना सम्भव नहीं है।	2. उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है।
3. लक्ष्य सम्पूर्ण शिक्षा-प्रणाली को प्रदान की जाने वाली वांछित दिशाएँ हैं। शिक्षा के लक्ष्यों को विषयों के अनुकूल परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।	3. उद्देश्य विषयों के अनुकूल परिवर्तनशील होते हैं।

Scanned with CamScanner

4. शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति निश्चित नहीं है।	4. उद्देश्य लक्ष्यों से विकसित या उत्पन्न नहीं हैं। प्रत्येक उद्देश्य की प्राप्ति शैक्षिक लक्ष्य की प्राप्ति का एक चरण होता है।
5. लक्ष्य व्यापक होते हैं। इस कारण वे विषय-वस्तु या अन्तर्वस्तु (Content) के चयन में निश्चित निर्देश नहीं दे पाते हैं।	5. उद्देश्य अन्तर्वस्तु के चयन में सहायता प्रदान करते हैं।
6. लक्ष्यों की व्यापकता एवं आदर्श-वादिता दिन-प्रतिदिन के कार्य में कक्षा-शिक्षक की निश्चित दिशा में सहायता नहीं कर पाती। इस कारण ये कक्षा-शिक्षक के लिये अर्थहीन होते हैं।	6. उद्देश्य विशिष्ट होने के कारण शिक्षक के लिये अर्थपूर्ण हैं। उद्देश्य निर्देशात्मक आयोजन (Instructional planning), छात्रों के निर्देशन आदि में शिक्षक की सहायता करते हैं।
7. लक्ष्य कक्षा-कक्ष की शिक्षण की रणनीतियों के निर्धारण में सहायक नहीं होते हैं।	7. उद्देश्य कक्षा-कक्ष की शिक्षण-रणनीतियों के निर्धारण में सहायक होते हैं।
8. लक्ष्य एक सामान्य कथन (State-ment) है।	8. उद्देश्य एक निश्चित एवं विशिष्ट कथन है।

Scanned with CamScanner